माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 14 अप्रैल 2016 को डा0 भीमराव अंबेडकर की 125 वीं जयंती पर सेक्टर–37, चण्डीगढ में आयोजित समारोह में दिया गया भाषण।

मंच पर उपस्थित चंडीगढ नगरपालिक निगम के मेयर व हमारे शहर के प्रथम नागरिक श्री अरूण सूद जी, मंच पर तीन IAS उपस्थित हैं–सेवानिवृत आई0ए0एस0 अधिकारी बाबूलाल जी, आर0 एल0 कल्सिया और जे0 आर0 कुंडल जी, डा0 अम्बेडकर स्टडी सर्कल के अध्यक्ष इन्द्र राज जी, महासचिव अनिल कुमार लम्धारिया जी, अन्य उपस्थित गणमान्य महानुभाव, प्रशासनिक अधिकारीगण, मीडिया पर्सन्ज तथा इस अवसर पर उपस्थित सभी भाईयो और बहनो!

डा0 भीमराव अंबेडकर जी की यह 125वीं जयंती है। मैं बहुत सौभाग्यशाली हूँ कि 14 अप्रैल 1891 को डा0 साहब का जन्म उस प्रदेश में हुआ जिस प्रदेश से मैं आया हूँ। उनका जन्म स्थान महु है जो इंदौर जिले में आता है। इस दृष्टि से उनका संबंध मध्य प्रदेश से है। बाद में उनकी पढाई–लिखाई महाराष्ट्र में हुई। प्रारंभ का उनका कर्मक्षेत्र भी महाराष्ट्र है। प्रारंभ की शिक्षा प्राप्त करने के बाद मुंबई से उन्होंने ग्रेजुएशन किया। लेकिन वे ऐसे पुरूषार्थी थे, ऐसे प्रतिभाशाली थे कि बड़ौदा राज्य के राजा की स्कॉलरशिप के बल पर सबसे पहले वे अमेरिका गए। आगे की पढ़ाई उन्होंने अमेरिका से की, कोलम्बिया युनिवर्सिटी से। आप सोचिए कहां उनका परिवार, जिस परिवार के वे सदस्य हैं उसकी दशा क्या थी और आप जरा यह भी सोचिए कि कहां अमेरिका की कोलम्बिया युनिवर्सिटी? अमेरिका से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात वे इंग्लैंड गए। इंग्लैंड से उन्होंने अन्य पढ़ाई के साथ–साथ कानून की परीक्षा पास की।

मैं सोच रहा था कि डा0 भीमराव अंबेडकर जी की जयंती मनानी है तो हम उनसे क्या सीखें। आज हम इस बात पर विचार करेंगे। यह बात सही है कि डा0 अंबेडकर जी ने, महाराष्ट्र में तालाब का पानी पीने का अधिकार दलित वर्ग को नहीं था, वह अधिकार दिलाने के लिए महाआंदोलन किया और सबको ले जाकर तालाब का पानी पीया। मंदिरों में दलितों का प्रवेश वर्जित था। इसलिए उन्होंने बहुत बड़ी संख्या में लोगों को ले जाकर नासिक के मंदिर में प्रवेश किया।

आप जरा इस बात पर विचार करिए कि जिस स्कूल में वे प्राइमरी शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाते थे वहाँ पर व्यवहार कैसा होता था? जिस क्लास में पढ़ते थे उस क्लास में नहीं बैठने दिया जाता था। वे और उन जैसे विद्यार्थियों को कक्षा से बाहर बैठने के लिए कहा जाता था। सबके साथ बैठ जाएँगे तो उनको छूना पड़ेगा, उनको स्पर्श करना पड़ेगा। आप सोच सकते हैं क्या स्थिति थी भारत की? जब प्यास लगती थी तो जहाँ पर सब पानी पीते थे वहाँ पर वे पानी नहीं पी सकते थे। उनको चपरासी को कहना पड़ता था कि प्यास लगी है पानी पिलाओ और उसकी मेहरबानी अगर हो जाए तो वह पानी पिलाता था अन्यथा प्यासे ही रहना पड़ता था। अगर वह पानी पिलाता भी था तो इस बात का ध्यान रखता था कि उसे कहीं स्पर्श न हो जाए।

एक बार जब वे दोनों भाई स्कूल से लौट रहे थे तो कुछ थक गए थे। आगे एक बैलगाड़ी जा रही थी। खाली बैलगाड़ी देखकर दोनों उसमें पीछे बैठ गए। जो बैलगाड़ी को चला रहा था, हाँक रहा था, ड्राइवर था उसने बैठते समय उनको देखा नहीं, लेकिन बाद में जब देखा तो पूछा आप कौन हैं? कहाँ से आए हैं? किस जाति के हैं? जब उन्होंने सही बताया तो जिस डंडे से बैलों को हाँक रहा था उसी डंडे से मारकर उनको नीचे उतार दिया। आप सोच सकते हैं कि किस अवस्था में से निकलकर वह पुरूषार्थी युवक अमेरिका में कोलम्बिया यूनिवर्सिटी में पढ़ा और इंग्लैंड पहुँचा?

यह जागरूक करने का तरीका था। जैसे कोई आंदोलन करता है, सत्याग्रह करता है वैसा आंदोलन और सत्याग्रह था। वे चाहते तो दूसरा रिलीजन भी स्वीकार कर सकते थे। लेकिन रिलीजन स्वीकार करने के समय भी उन्होंने इस बात को सोचा कि जिस रिलीजन का जन्म भारत में हुआ है, जो भारत की आत्मा में बसता है, जो भारत की करूणा और दया के संदेश को लेकर चलता है उस गौतम बुद्ध के द्वारा चलाया हुआ वह धर्म, मैं उसको स्वीकार करूगाँ। यह उनकी प्राकृतिक इच्छा नहीं थी बल्कि समाज पर एक तमाचा था कि जरा समाज को ठीक करो।

अब जरा एक बात का और विचार करो कि देश स्वतंत्र तो हो गया लेकिन देश चलेगा कैसे? देश के सपने कैसे पूरे होंगे? स्वतंत्रता के बाद वह कौन सी पद्धति होगी, वह कौन सा तौर तरीका होगा, वह कौन सी कार्य–प्रणाली होगी जिसके आधार पर देश का समुचित विकास होगा, देश का उत्थान होगा? इस प्रथा को, कार्य–प्रणाली को, इस प्रक्रिया को तैयार करने वाला कौन था? वे डा0 भीमराव अंबेडकर थे। अगर हम उनका जन्मदिन मना रहे हैं तो इस दिन आप कुछ माँगिए मत। अपने पुरूषार्थ को जगाइए और उस पुरूषार्थ को जगाइए जिस पुरूषार्थ के माध्यम से दुनिया आपके सामने झुके। हम भारत के सामने ऐसा व्यक्तित्व चाहते हैं जो खुद नहीं झुकेगा, खुद नहीं माँगेगा लेकिन वह ऐसा पुरूषार्थ वाला होगा, ऐसा पराक्रमी होगा कि उसके सामने दुनिया को झुकना पड़ेगा। डा0 अंबेडकर जहाँ से चले थे और जहाँ पर पहुँचे उसका विचार करो तो उन्होंने ऐसी क्षमता, ऐसा पुरूषार्थ, ऐसा पराक्रम जगाया कि सब उनके सामने नतमस्तक हो गए। आज उसकी जरूरत है।

भारत में कई महापुरूष हुए, कई महापुरूष महत्वपूर्ण हैं। लेकिन भारत के लिए दो महापुरूष बहुत महत्वपूर्ण हैं। उनमें से एक हैं महात्मा गाँधी और दूसरे भीमराव अंबेडकर। महात्मा गाँधी को हम राष्ट्रपिता कहते हैं। उनको राष्ट्रपिता इसलिए कहते हैं कि उन्होंने देश को स्वतंत्र करवाया। यह भी संयोग ही है कि महात्मा गाँधी ने भी कानून की पढ़ाई इंग्लैंड से की थी और डा0 भीमराव अंबेडकर ने भी कानून की पढ़ाई इंग्लैंड से ही की थी। जिस देश से उन्होंने पढ़ाई की थी उसी देश को उन्होंने अपने देश से बाहर भी भगाया। दोनों कानूनविद थे। देश की स्वतंत्रता के पीछे अग्रगण्य भूमिका किसी की है तो वह महात्मा गाँधी की है।

अंग्रेज तो कहा करते थे भारत राष्ट्र ही नहीं है। यह तो राज्यों में बँटा हुआ है, यहाँ पर कई राजा हैं। 565 राजा थे जब लॉर्ड माउंटबेटन देश को स्वतंत्र करके गया था।

यह तो इन सब राजाओं से विलयीकरण पर दस्तक कराने वाले सरदार वल्लभ भाई पटेल थे जिन्होंने सबको इकट्ठा कर दिया। यह सारी की सारी प्रक्रिया देश स्वतंत्र होने के बाद हुई। इसलिए राष्ट्र का प्राथमिक रूप जो पहले से था उसको देने का काम महात्मा गाँधी के नेतृत्व में हुआ। इसलिए वे राष्ट्र के जन्मदाता बने, वे राष्ट्रपिता बने।

लेकिन हम क्या सोचते हैं, स्वतंत्रता मिलने के साथ ही हमको सब कुछ मिल गया? स्वतंत्रता का मतलब क्या है? इसलिए जब 1947 में देश को स्वतंत्रता मिली तो सिर्फ कुर्सी पर बैठने वाले आदमी का परिवर्तन हुआ था। अब तक जहाँ पर लॉर्ड माउंटबेटन बैठते थे वहाँ पर प0 जवाहर लाल नेहरू आकर बैठ गए। राष्ट्रपति माननीय डा0 राजेन्द्र प्रसाद बन गए। सिर्फ यही परिवर्तन हुआ था। यह परिवर्तन देश की स्वतंत्रता नहीं है। देश की स्वतंत्रता तब मानी जाएगी जब देश का प्रत्येक नागरिक अपने स्वाभिमान की रक्षा कर सके, अपना जीवन यापन कर सके, बराबर के अवसर प्राप्त कर सके, कहीं पर उसका अन्याय और शोषण न हो। जब तक स्वतंत्रता का अहसास प्रत्येक व्यक्ति को और खासकर गरीब व्यक्ति को, खासकर उस व्यक्ति को जो पंक्ति में आखिर में खड़ा है उसको नहीं होगा तब तक देश पूरी तरह स्वतंत्र नहीं माना जाएगा।

इसलिए जब क्रान्ति हुई और देश स्वतंत्र हो गया तो डा0 संपूर्णानंद जी ने कहा कि क्रान्ति अभी अधूरी है क्योंकि आपको राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई है, राजा की कुर्सी पर बैठने वाला आदमी बदला है और बातें तो अभी होनी हैं। उनमें पूर्ण स्वतंत्रता के लिए पहली शर्त सामाजिक स्वतंत्रता है, सामाजिक समरसता है, सामाजिक बराबरी है, social equality है। हर आदमी को आदमी की तरह देखिए, उसको किसी भी तरह बाँटिए मत, न तो जाति के आधार पर, न पैसे के आधार पर और न शिक्षा के आधार पर। आदमी तो आदमी है उसे आदमी की तरह देखिए। जब तक यह सामाजिक स्वतंत्रता, सामाजिक समरसता हमें नहीं मिलती है तब तक देश की स्वतंत्रता पूरी नहीं है।

विचार करो कि महात्मा गाँधी ने तो देश को राजनीतिक स्वतंत्रता दिलवाई लेकिन सामाजिक समरसता का शंखनाद, सामाजिक समरसता के लिए आवाज, सामाजिक समरसता का प्रारंभ, उसके लिए आंदोलन और सामाजिक समरसता के लिए संविधान में Provision किसने किया? यह डा0 भीमराव अंबेडकर ने किया। हमें अपने देश में दूरदृष्टाओं की जरूरत है। Politicians को भी ठीक रास्ते पर चलाने के लिए दूरदृष्टा की जरूरत है। अगर वह नहीं होगा तो हमारी स्वतंत्रता अधूरी होगी और स्वतंत्रता से जो हम प्राप्त करना चाहते हैं वह नहीं प्राप्त कर पाँएगे। इसलिए इस दृष्टि से डा0 भीमराव अंबेडकर को समझो।

एक बात जो बार–बार देखने को मिल रही है कि डा0 भीमराव अंबेडकर का महत्व अब क्यों नजर आ रहा है, इससे पहले क्यों नहीं आया? वास्तव में देश की स्वतंत्रता के पश्चात हम कुछ ऐसी बातों में लग गए जिससे काम तो हुए हैं लेकिन देश का विकास नहीं हुआ, देश पटरी पर नहीं आया, देश का विकास अपनी संस्कृति के आधार पर नहीं हुआ। जो आपने स्वतंत्रता के माध्यम से प्राप्त करने की सोची थी वह हमको नहीं मिला।

इसलिए स्वतंत्रता के 50 वर्ष बीत जाने के बाद 1997 में जब स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती मनाई गई तो पूरे देश में सभाएँ हुई, लोकसभा व राज्यसभा का विशेष अधिवेशन हुआ यह विचार करने के लिए कि 50 वर्ष बीत जाने के बाद भी हमारा विकास क्यों नहीं हुआ? हम जो चाहते थे वह मिला क्यों नहीं? शोषण तो उसी तरह का है, अन्याय तो वैसा ही हो रहा है, गरीब तो गरीब ही है, यह क्या हुआ, यह कैसी स्वतंत्रता है? स्वर्ण जयंती पर इतनी सारी चर्चा होने के बाद भी हम निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाए।

मेरा मानना है कि आप देश का विकास तब तक नहीं कर सकेंगे जब तक डा0 भीमराव अंबेडकर ने संविधान के माध्यम से जो हमें दिया है उसे आप सच्चे मन से, सच्चे दिल से लागू नहीं करेंगे। इसलिए उनका जन्मदिन राष्ट्रीय दिवस है। यह सामाजिक समरसता का दिवस है। सरकार का नहीं यह हम सबका कर्त्तव्य है कि हम उनके विचारों को जानें और वे विचार अपने व्यक्तित्व में उतारें, अंबेडकर का नाम लेकर अपना स्वार्थ, अपनी रोटी सेंकने की कोशिश न करें, अंबेडकर को समझें। वे पूर्ण रूप से भारतीय थे, संस्कृति को समर्पित थे। वे खुद के लिए कुछ नहीं चाहते थे तब भी उनको सब कुछ मिला।

एक बार जब पृथक निर्वाचन प्रणाली को लेकर महात्मा गाँधी जी से उनका टकराव हुआ तो महात्मा गाँधी अनशन पर बैठ गए। देश के अंदर सभाएँ होने लगीं। शुभकामनाएँ और यज्ञ होने लगे कि महात्मा गाँधी को बचाओ। तो भीमराव अंबेडकर ने देश को समर्पित होकर अपनी बात वापस ले ली और बापू के लिए समर्पण कर दिया कि आप हमारे लिए सर्वोपरि हैं। इसलिए डा0 भीमराव अंबेडकर पूरी तरह राष्ट्र को समर्पित थे, अपनी संस्कृति को समर्पित थे। उनका अनुकरण करना संपूर्ण समाज के लिए हितकारी है।

अपने देश में ऐसे वर्ग जो वंचित है उनके लिए दलित शब्द मुझे अच्छा नहीं लगता। यह दलित शब्द it is down trodden, it is not a good word, मुझे अच्छा नहीं लगता। एक वर्ग ऐसा है जो वंचित है। उसको सारी सुविधाएँ नहीं मिल रही हैं। कुछ रूढियाँ हैं। उन रूढियों के कारण वह परेशान है। ऐसे वंचित समाज को आगे लाने के लिए हम जरा अपने अंदर भी झांकें। हम उसका राजनीतिक लाभ न उठाएँ। अपने अंदर झांककर अपने पुरूषार्थ के बल पर, अपनी कमियों को दूर कर समाज के सामने ऐसा चित्र प्रस्तुत करें कि देश की संपूर्ण स्वतंत्रता के लिए जो कुछ आवश्यक है वह वातावरण हम बना सकें।

हमारा अपना सौभाग्य है कि आज केंद्र की सरकार और राज्य सरकार डा0 भीमराव अंबेडकर के जीवन को, उनके विचारों के महत्व को समझी है और सही दिशा में देश चल निकला है। हम इसमें सहयोग करके अपने देश का भविष्य ठीक करें। इन्हीं शब्दों के साथ डा0 भीमराव अंबेडकर के चरणों में मैं अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ। आप इतनी बड़ी संख्या में यहाँ पर एकत्रित हुए आप सबको धन्यवाद और शुभकामनाएँ देता हूँ।

जयहिन्द!